



Impact Factor - 0.241 | Special Issue - I June 2021 | ISSN 2250 - 0383



Itihas Sankalan Patrika

SHODHANKAN

International Half Yearly
Peer Reviewed Referred
Research Journal

Special Issue on
Ancient Indian Iconography
& Architecture

Organized by
Sarda Education Society (Trust)'s
(A Linguistic Minority Educational Institute)

SMT RADHABAI SARDA
ARTS, COMMERCE &
SCIENCE COLLEGE
ANJANGAON SURJI - 444705,
DIST - AMRAVATI (Maharashtra)
(Affiliated to Sant Gadge Baba Amravati
University Amravati)

Executive Editor
Dr Nitin Ulhasrao Saraf

Guest Editor
Dr Arvind Sontakke

Guest Publisher
Dr Bashisth Choubey
Principal



Sri Madhava Shastri



Shri Sarada Education Society (Trust)'s
(A Linguistic Minority Educational Institute)



Smt. Radhabai Sarada Arts, Commerce & Science College,
Anjangaon Surji, Dist. - Amravati
Affiliated to: Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati

organizes

An Interdisciplinary National Level One Day e-Conference

of

Iconography Research Society, Maharashtra
1st Annual Conference

on

“Ancient Indian Iconography and Architecture”

Sunday – 20th June 2021

(For this issue only)

Dr. Nitin Ulhasrao Saraf
Executive Editor

Dr. Arvind Sontakke
Guest Editor

Editorial Board

Dr. Vyanktesh Lamb, Aurangabad
Dr. Mukund Devarshi, Beed
Dr. Kamaji Dak, Aurangabad
Dr. Kavita Tathed, Yavatmal
Dr. Shanti Jadhvar Gite, Dahiphal Wadmauli,

Dr. Rambhau Mutkule, Vasmat (Hingoli)
Mr. Laxmikant Sonwatkar, Parbhani
Dr. Jyoti Pethkar, Mandnagad
Dr. Vinod Raipure, Jalgaon
Dr. Surendra Shirsat, Pune

Mr. Aaditya Phadke, Kolhapur

Peer Reviewed Committee

Dr. Pradip Kumar Mandal, Manbazar (WB)
Dr. Naresh J. Parikh, Kadi, (North Gujrat)
Dr. Sushim Pagare, Indore

Dr. Prabhakar Dev, Nanded (MS)
Dr. Santosh Bansod, Amravati
Dr. Satish Kadam, Kolhapur,

Dr. Sumitra Hembram Dumka (Jharkhand)

Organizing Committee

Prof. Sangita Jawanjal
Ms Navita Malani

Dr. Satyendra Gadpayle
Dr. Vivek Patil

Shri Gopal Bagdi
Shri Ramchandra Kulkarni

-Venue-

Smt Radhabai Sarada Arts, Commerce & Science College, Anjangaon Surji

Published By

ITI HAS SANKALAN SANSTHA MAHARASHTRA

Dr. Radhakrishna Joshi

22 B, "Prathmesh Omkareshwar Bunglow,
Behind Savedi Bus-Stand, Savedi, Ahmadnagar-414001
Email itihassankalan2020@gmail.com n Mob 7972236844 / 9765351115

INDEX

Sr. No.	Article Name	Author	Pg. No.
1	वाकाटककालीन मराठवाड्यातील विष्णूमूर्ती	प्रा डॉ जी एम पाटील	12
2	दिवपाल	प्रा डॉ हमीद उमर अली काझी	17
3	मंदिर स्थापत्य व मूर्ती संदर्भात दगाडाचे निकष	श्री लक्ष्मीकांत नारायणराव सोनवटकर	23
4	वाकाटक कालीन मंदीर स्थापत्य	डॉ मिनल खेरडे	29
5	कोंडाणे बौद्ध लेणी	प्रा नागोराव तारू	35
6	बहादुरपुरा येथील राष्ट्रकुट भवन वस्तुसंग्रहालयातील सूर्य व नंदी प्रतिमा	प्रा नामदेव तुकाराम वडगिरे	37
7	अतुलनीय रावणानुग्रह शिवमूर्ती : विशेष सदभं वेरूळ लेणी	अनिता प्रल्हाद आढागळे	39
8	पिंपळे ता. इदापूर येथील तीन मूर्तीची ओळख	डॉ. शामराव घाडगे .	42
9	नवग्रह : एक ऐतिहासिक मागोवा	डॉ ज्योती पेंढकर, डॉ अरविंद सोनटक्के	44
10	राष्ट्रकुटाची उपराजधानी कंधार परिसरातील जैन शिल्पबैभव	प्रा विनायक दिलीप हिरे	52
11	शिल्पप्रकाश ग्रंथामधील अलसा चित्र आणि मंदिरावरील सुरसुंदरी शिल्पे यांचा चिकित्सक अभ्यास (अध्ययन क्षेत्र कोणेश्वर आणि आदिनाथ मंदिर, खिद्रापूर)	श्री योगेश प्रभुदेमाई, मानसी चौगुले	54
12	सातवाहन व तेर कालीन लज्जागौरी उपासना	डॉ. रमेश दत्तात्रय गंगथडे	59
13	राष्ट्रकुटकालीन मराठवाड्यातील जैन पार्श्वनाथ मुर्ती	डॉ चंदन एम. बावलगावे	61
14	कामशिल्पांचा संगीत शिल्पांशी अनुबंध	डॉ अरविंद सोनटक्के , श्री किशोर बोरकर	63
15	पंढरपूर जि. सोलापूर येथील चंद्रभागा पात्रात मिळालेली निऋतीची प्रतिमा	प्रा. डॉ. माया ज. पाटील श्री. ज्ञानेश्वर मतिश झरकर	66
16	मानूर (नागनाथ) येथील सिद्धेश्वर मंदिर व अन्य पुरावशेष	डॉ. विजय सरडे	69
17	शिरपूर येथील राष्ट्रकुट कालीन मंदिर स्थापत्य	प्रा रवी आत्माराम वाविस्कर	75
18	श्री विठ्ठल मूर्तीची मुर्तीशास्त्र	श्री राजकुमार सोनलाल जानवळे	81
19	निलंगा येथील निलकण्ठेश्वर मंदिर : शिल्पकलेचा अलौकिक नमुना	डॉ सुभाष वैजलवार	84
20	पेडगावच्या लक्ष्मीनारायण मंदिराच्या बाह्यांगावरील मूर्ती	डॉ सुरेंद्र अर्जुन शिरसट	87
21	तेरची हस्तिदंती मूर्ती	डॉ नितीन उल्हासराव सराफ	92
22	कान्हेरी लेणीतील तारा-मूर्तीशाखाच्या दृष्टीने घेतलेला आढावा	डॉ अश्विनी पतंगे	94
23	'भारतीय मूर्तिकला में गणेश प्रतिमाओं का विकास'	डॉ. संजय कुमार सिंह	97
24	Significance of Idols and Temples in Hinduism	Dr Ravi Subhashrao Satbhai	99
25	The <i>Dikpalas</i> (Guardian Deities) Over the <i>Gopuram</i> of the Kailasa Cave temple, Ellora, Dist Aurangabad, Maharashtra	Shalaka Pravinkumar Bhandare	101

संपादकीय

दो शब्द ...

कला मानव मस्तिष्क की भावनाओं और आकाशांशों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कला मानव जीवन की सहचरी रही है। मानव विकास का दिग्दर्शन कला के माध्यम से ही संभव हुआ है, जिसकी प्रथम किरण आदिम मानवों द्वारा निर्मित शैलचित्रों के रूप में प्रस्फुटित हुई। शिलाचित्रों को ही परवर्ती काल का मुल स्रोत होने का गौरव प्राप्त हुआ। आदिम जीवन तो धीरे-धीरे परिवर्तित हुआ, साथ ही कला में भी परिष्कृत रूप सामने आया। कला समाज का दर्पण और सत्य – शिवम् - सुंदरम् का अच्छा समन्वय तथा एक सांस्कृतिक धरोहर है इसी के माध्यम से ही किसी भी देश की गौरवपूर्ण सुविकसित सभ्यता और तत्कालिक समाज के उन्नयन का परिचय होता रहा है। कला का आंदोलन एक समय जन्म लेकर फलते - फुलते और बूझी करते रहे हैं। तरंगों की तरह अपनी गति दुसरे युग की प्रेरणाओं को सौंपकर विलीन हो जाते हैं, उसी का परिणाम है की, आज हमारे पास कला की विपुल विरासत उपलब्ध है। कला की इसी विपुल संपदा से हमारी सामाजिक चेतनाओं को सदैव स्फुर्ती एवं गति प्राप्त होती रही है, कला अनुरागी के लिये प्रेरणापद उपादेय है।

भारतीय संस्कृति स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, नृत्य संगीत ऐसी आदि कला की अनेकों विविधताओंको अपने अंदर समाहित किये हुए है। इसमें पुरातनता, धर्मपरकता, आध्यात्मिकता, दार्शनिकता का समन्वय है। हमारी संस्कृति एकीकरण तथा समन्वय, 'सर्वजन सुखाय एवं हिताय' के मौलिक सुत्रों में पिरोई गयी एक माला के समान है। इसलिए कला व संस्कृति हमारे जीवित कोश है।

भारतीय स्थापत्य कला सबसे प्राचीन मानी जाती है। जो भी अवशेष सिंधू घाटी की सभ्यता से प्राप्त हुए है। उनसे यह स्पष्ट होता है की, स्थापत्य का अस्तित्व सदैव से ही रहा है। सुनियोजन, सुव्यवस्थित और देशकाल के अनुरूप व्यवस्था बनती रही है। प्रत्येक कलाकृती यह निर्माण काल की अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवधारणाओं से परिचित कराती है। भारत में कितने ही क्षेत्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक केंद्र के रूप में अपनी विशिष्टताओं को दिग्दर्शक से समेटे हुए है। पुरातात्विक तथा शिल्पगत अवशेष आज भी प्राचीन कला केंद्रोंमें दृष्टिगत होते हैं। यदि पुरे भारत वर्ष के कला कृतियों का भ्रमण किया जाए तो शायद एक जीवन कम पड जाएगा।

स्थापत्य कला से सुशोभित जीतने भी प्राचीन मंदिर है सभी की दीवारों, आलों एवं मुख्यद्वारों पर हमें वेहद खुबसुरत अलंकरण दिखाई देते हैं, ऐसा लगता है मानो वो जीवित हो, पत्थरों पर उकेरे गयी मूर्तियां, उनका रूप सौंदर्य, अलंकरण, मुखमुद्रा, भाव ऐसा लगता है मानो मूर्तियां अभी बोल पडेगी, परंतु दुर्भाग्यवश देहात अंचलो के मंदिर, स्थापत्य के भग्नावशेष, खंडित मूर्तियां, पुरावशेषों के रूप में दिखाई देते हैं।

पुरास्थलों का भ्रमण करते हुए ध्वंश-अध्वंश मंदीरों को तथा यत्र-तत्र बिखरी हुयी श्रेष्ठ कला के अनुपम दर्शन कर जितनी अधिक ज्ञान बूझी एवं प्रसन्नता होती है तभी वहाँ उनको धूल - धुसरीत होते देखकर गहरी पिडा भी होती है। आज जो आधुनिकता की अंधी दौड रही है उसमें हमारा इतिहास, संस्कृति, कला सबकुछ धुमिल होता जा रहा है। वर्तमान समय में स्थापत्य एवं मूर्ति शिल्प लोगों की अज्ञानता, प्राकृतिक क्षरण एवं तस्कारी आदि के कारण बहुत तेजी से नष्ट एवं विलुप्त हो रही है। कृषी भूमि की बूझी से भी पुरास्थल एवं पुरावशेषों को क्षति पहुँची है। यदि इसे हमारे द्वारा सुरक्षित नहीं किया गया तो ये प्राचीन धरोहर अतित का पृष्ठ बन कर रह जाएगी।

आज जरूरत है कि, एक बड़े स्तर पर कला अलंकरणों एवं धरोहरों को बचाने की, कुछ ऐसी विचार श्रृंखला जागृत करने कि जरूरत है। जिससे हमारी युवा पिढ़ि कला के साथ जुडे, एक नये अलंकरणों के आयाम को स्थापित करने कि जरूरत है। ताकि युवा पिढ़ि कला के माध्यम से मानवी सहिष्णुता को जीवित रख सके और आनेवाले युगों तक हमारी यह विशाल सांस्कृतिक धरोहर, विरासत गौरवान्वित और सुरक्षित रहे। इसी महान ध्येय से प्राचीन स्थापत्य, मुर्ती शिल्प कोचिरस्थायी बनाने के लिये हमने, "मूर्तिशास्त्र संशोधन संस्था" का संगठन किया है।

हमारा यह संगठन प्राचीन स्थापत्य, मूर्ति शिल्प, कला, इतिहास पर आधारित है। जिसमें विविध क्षेत्र, संबंधित ज्ञात - अज्ञात पुरास्थलों, विभिन्न भू-भागोंके सर्वेक्षण से उपलब्ध स्थापत्य, मूर्ति शिल्प व अन्य कला का अध्ययन करना है। विभिन्न कालखंडों से संबंधित देवाल्यों, गुफाएँकालानुक्रम के आधार पर विभेद, प्रतिमा लक्षण, प्रतिमाओं की पहचान, वर्गीकरण करना है, साथ ही साथ उनके आधार पर उस क्षेत्र का धार्मिक स्वरूप तथा सांस्कृतिक इतिहास की विवेचना करना है। पुरावशेषों के आधार पर उस काल के विशेष रहन - सहन, वेशभूषा, रीतिरिवाज, शासकों के राजधर्म को प्रकाश में लाने का सार्थक प्रयास हमें करना है ताकि उस क्षेत्र का धार्मिक, राजनितिक, सामाजिक एवं आर्थिक आदि पक्षोंका वास्तविक रूप में निरूपण हो सके। संगठन के माध्यम से विविध क्षेत्र के स्थापत्य, मूर्ति, शिल्प, मंदिर और गुफाएँको नष्ट होने से पूर्व जतन कर सके। हमारे पूर्वजों की यह सांस्कृतिक विरासत एकसुत्र में पिरोकर अध्ययनकर्ता, शोधकर्ता तथा जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करने का एवं आनेवाली पिढ़ि के सामने संजोकर रखने का मानस है।

हम ई-संगोष्ठी के लिये सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं। आपका स्नेह हमें सदैव प्रोत्साहित करता रहेगा एवं हमारा मनोबल बढ़ाता रहेगा। सभी प्रतिभागियों ने, लॉक डाऊन समय में तथा मुद्रण व्यवस्था न होते हुए भी बहुत रुची के साथ शोधनिबंध भेजकर ई-शोधपत्रिका का मुर्त स्वरूप प्रदान किया है। सहृदय से सभी का आभार !

धन्यवाद !

डॉ. अरविंद सोनटक्के

डॉ. नितोीन सराफ

नवग्रह : एक ऐतिहासिक मागोवा

डॉ ज्योती पेटकर,
लोकनेते गोपिनाथजी मुडे महाविद्यालय,
मदनगड, जि रत्नागिरी
Email ID- jyotipethakar@gmail.com

डॉ अरविंद मोनटक्के,
दिगंबर बिंदू महाविद्यालय,
भोकर, जि नांदेड
Email ID - arvindsontakke72@gmail.com

प्रबोधन प्रक्रिये नंतर मानवी ज्ञानाच्या कक्षा रुदावल्यानिष्कर्ष या निरीक्षण, प्रयोग, मनन, चिंतन, अध्ययन, तर्कवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण लागल्यामुळे जुन्या अनेक संकल्पना मोडीत निघाल्या व अनेक नव्या गोष्टींचा साक्षात्कार सर्व गोष्टींचा मानव जीवनात उपयोग करून झालानव्या या शास्त्राच्या विकासामुळे यापैकी एक खगोलशास्त्र हे होय अनेक नव्या शास्त्रांचा उदय झाला ज्ञानाचा मानवी जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात प्रभाव पडला त्याचे उपगु, त्यातील ग्रह, सूर्यमाला, सूर्य, चंद्र यांचे शास्त्रीय ज्ञान मानवामे झालेअवकाश व अंतरा, आकाशगृह यांचे स्वरूप, गती, भ्रमण, स्थिति, स्थान, सूर्यमाला व त्यातील ग्रह यांना नवग्रह या नावाने प्राचीन काळापासून भारतात ओळखले जाते. प्रकाश याचे खगोलीय ज्ञान प्रबुद्ध मानवामे झाले उद्देश -

- 1) नवग्रहांचा ऐतिहासिक मागोवा विशेषत भारतीय संदर्भात घेणे हा माझ्या शोधनिबंधाचा उद्देश आहे
- 2) भारतामध्ये या नवग्रहांचे भारतीय मूर्ती विज्ञानातील महत्त्व शोधणे

संशोधनाची पद्धती -

- 1) प्रस्तुत संशोधन करण्यासाठी संशोधिकेने निवेदनात्मक विश्लेषण पद्धतीचा अवलंब केला आहे
- 2) प्राथमिक व दुय्यम संदर्भ साहित्य व छायाचित्र यांचा उपयोग संशोधन साहित्य म्हणून केला आहे

कीवर्ड्स:-

सूर्य, सूर्यमाला, नवग्रह, बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगळ गुरु, शनी, युरेनस, नेपच्यून, मूर्ती, पुगण, प्रतिक, आयुध

प्रस्तावना :-

आधुनिक ज्ञानाप्रमाणे सूर्य या ताऱ्या भोवती फिरणारे ग्रह, उपग्रह, लघुग्रह व धूमकेतू या सर्वांना मिळून सूर्यमाला म्हटले जाते. मायाच्या आकाराच्या बाजू असलेल्या आकाशगंगेच्या एका बाजूला सूर्यमाला आहे. सूर्या भोवती फिरणाऱ्या ग्रहांची संख्या आठ आहे. सूर्यमालेतील आठग्रह बुध, शुक्र, पृथ्वी आणि मंगळ असून ते खडकाळ आहेत. बाह्य ग्रह गुरु व शनी वायूरूप तर युरेनस आणि नेपच्यून बर्फा रूप आहेत. ग्रह हा सूर्याचा प्रकाश परावर्तित करतात. आपल्या सौर मंडळाच्या सूर्यमालेच्या पलीकडे आणखी हजारे ग्रह मापडले आहेत. वैज्ञानिक त्यांना एक्सोप्लेनेट म्हणतात (एकत्रो म्हणजे "बाह्य")² बुध / Mercury, शुक्र / Venus, पृथ्वी / Earth, मंगळ / Mars, गुरु / वृहस्पति / Jupiter, शनी / Saturn, अरुण / हर्शल / Uranus, वरुण / Neptune ही सूर्याभोवती फिरणाऱ्या ग्रहांची नावे आहेत.

सूर्यमालेतील ग्रह त्यांच्या स्थानानुसार

एका विशिष्ट गतीला धारण करणारे ते ग्रह होय. अशी ग्रहाची व्याख्या संस्कृती कोशात पहायला मिळते. एकूण 9 ग्रह मानले जातात. पृथ्वी ही सूर्यमाले मध्ये सूर्यापासून तिसऱ्या क्रमांकावर आहे. सूर्यमालेतील सर्व ग्रह त्यांच्या उपग्रहाना घेऊन सूर्याभोवती गोल फिरतात. आकाश मंडलामध्ये असलेल्या ग्रह मालिका या खगोलशास्त्रीय दृष्टिकोनातून जशा महत्त्वपूर्ण आहेत तशाच ज्योतिषशास्त्राच्या अभ्यासकांसाठी ही महत्त्वपूर्ण आहेत. या ग्रहाचा मानवी जीवनावर होणारा प्रभाव याविषयी ज्योतिषशास्त्रात बरीच माहिती आढळून येते.

एकूण 9 ग्रह मानले जातात. प्राचीन काळात सूर्याला व चंद्राला देखील ग्रह मानत असत. त्यानुसार हे ग्रहगोल आपल्या जीवनावर प्रभाव टाकतात अशी भावना भारतीय मनुष्याची झाली होती. "सूर्य" मानवी जीवनावर प्रभाव टाकतो या मिळालेल्या अनुभवावरून सर्व ग्रह मानवी जीवनावर प्रभाव टाकत असावेत या भावनेतून ग्रह, गशी, त्याचे स्थान यांचा मानवी जीवनावर, त्यांच्या आयुष्यातील विवाह, कर्तृत्व, मृत्यु या मागण्या महत्त्वाच्या घटनांवर चांगला, वाईट प्रभाव पडतो असे प्राचीन भारतीयाना वाटू लागले. त्यामुळे आकाशातील ठळक दिमणारे ग्रह व त्यांचे स्वामित्व मानवाने मान्य केले. या भावनेतूनच ग्रहाची पूजा, त्यांची अनुष्ठाने, शांती अशी विविध कर्मकांडे व त्यांच्या उत्पत्ति विषयक अनेक अद्भुत पौराणिक कथा यांचा उदय झाला. प्राचीन भारतीय रवि (वार) (रवि-सूर्य), सोम (वार) (सोम-चंद्र), मंगळ (वार), बुध (वार), गुरु (वार), शुक्र (वार), शनि (वार), राहू व केतू असे नऊ ग्रह मानत. तसेच हर्षल, अरुण, युरेनस आणि नेपच्यून, वरुण हे ग्रह प्राचीन काळात ज्ञात नव्हते. काही विद्वानांच्या मते पृथ्वीच्या फिरण्याची कक्षा आणि चंद्राच्या परिभ्रमणाची कक्षा दोन ठिकाणी एकमेकाना छेदतात. त्या सपाट बिंदूंना राहु आणि केतू म्हटले गेले. इतकेच नव्हे तर हे बिंदू पण आपले स्थान सतत बदलत असतात म्हणून त्यांना ग्रहांचा दर्जा मिळाला. आज मुद्दा ज्योतिष शास्त्रात याच नऊ ग्रहाना स्थान नव्हे तर हे बिंदू पण आपले स्थान सतत बदलत असतात म्हणून त्यांना ग्रहांचा दर्जा मिळाला. आज मुद्दा ज्योतिष शास्त्रात याच नऊ ग्रहाना स्थान आहे. पृथ्वी हिंस ग्रह न मानता तिची भूमाता म्हणून पूजा केली जात असे. तिच्या विषयी मुद्दा अनेक पौराणिक कथा रचल्या गेल्या आहेत.

ग्रहांच्या नामसंज्ञा-

सूर्यहेली - तपन, दिनकृत, भानु, पूषा, अरुण, अर्क
 चंद्र- सोम, शीतद्युति, उडुपति, ग्लो, मृगांक, इन्दु, शीतरश्मि
 मंगळ- भौमवक्र, अर, क्षितिज, रुधिर, अंगारक, क्रूरनेत्र कुज
 बुध- सौम्य, तागावनय, वित्त, ज्ञ, बोधन, इन्दुपुत्र, हेम्नवित्त
 गुरु- मन्त्री, वाचस्पति, मुगाचार्य, देवेज्य, जीव, अगिरा, सुरगुरु, वचमापति, ईज्य नावे
 शुक्र- काव्य, उशना, कवि, मित भृगुमुत्त अच्छ, आम्फुजित्त, दानवेज्य, भृगु, भार्गव
 शनि छायासून - तरणितनय, कोण, शनि, आर्कि, मन्द, असित, सौरि
 राहु- सर्प, असुर, फणि, तम, सिहिकेय, अगु
 केतु- ध्वज, शिखि

प्राचीन काळापासून भारतामध्ये ठिकठिकाणी समृद्धी, शांती, शेती, पाऊस, आरोग्यपूर्ण दीर्घायु, शत्रूचा नाश या विविध हेतूने नवग्रहाचे पूजन, उपासना केली जाते. याज्ञवल्क्य स्मृतीमध्ये ग्रह यज्ञ, ग्रहशान्ती व नवग्रह पूजनाचा उल्लेख मिळतो. अग्नि पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अपराजितापुत्रा, रूपमण्डणम, अशुमद्रेदागम या प्राचीन ग्रंथांमध्ये नवग्रह मूर्ती बाबत मविस्तर वर्णन आहे. वैदिक धर्माबरोबरच जैन धर्मांमध्ये सुद्धा नवग्रह पूजेची परंपरा लोकप्रिय होती. आठव्या शतकातून जैन लेणी, मदिरे यांच्यावर नवग्रहाचे अकन झालेले दिसते. विगोपत, दिगवर जैन लेणी, मदिरे यांच्या प्रवेशद्वारावर, तीर्थंकर मूर्तींच्या जवळ नवग्रह मूर्तींचे अकन नियमित आढळते. आचारदिनकर, निर्वाणकलिका, प्रतिग्रामारमग्रह या जैन साहित्यामध्ये नवग्रह प्रतिमा लक्षणाचे वर्णन आहे.⁴

भारतात अनेक मदिरे, शिल्पे यांच्या जवळ नवग्रह शिल्पपट्टे आढळतात किंवा काही स्वतंत्र नवग्रह मदिरे पण आहे. इटालीमध्ये मुद्धा नवग्रह शिल्पपट्टे आढळता आहे. काही ठिकाणी मंगळ शिवाय इतर सर्व ग्रहांना वाहन दाखविले आहे तर बगाल मधील कनकदिगी येथे सर्व ग्रह कमळावर बसलेले दाखविले आहेत. ओरिसा राज्यातील मयूभज जिल्ह्यातील खिचिंग मध्ये बारा आरे असलेले नवग्रह चक्र मापडले आहे. गौकौडचोळपुमयेथील नवग्रह शिल्प रथाच्या प्रारूपमध्ये असून त्याच्या मध्य भागी उमललेले कमळाच्या प्रतिक स्वरूपात सूर्य दाखवला आहे. रथाच्या चारी बाजूला आठ ग्रह व समोर सात घोड्यांचे शिल्प आहे. गुर्गी येथील नवग्रह पट्टे मध्ये मंगळ सोडून इतर सर्व ग्रह सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु हे ग्रह रथ, घोडा, सिंह, पक्षी, गिधाड, रथ या वाहनावर असून केतूचे वाहन म्यष्ट दिसत नाही. वेन्ड्र गिसचं मोमायटीच्या म्युझियम मध्ये शिल्पपट्टावर कमळावर बसलेले नवग्रह आहेत. व्हिएतनाम मध्ये एक नवग्रह पट्टे सापडला असून त्यामध्ये सूर्याच्या रथास दोन घोडे आहेत. चंद्र मिहासनावर बसलेला असून मंगळ बैल, गुरु हत्ती, शनि एडका व केतू मिहावर आहेत. बुध, शुक्र, राहु याची शिल्पे भन्न झाल्यामुळे त्याचे वाहन ओळखता येत नाही.⁶

शिल्परत्न या ग्रंथात सर्व ग्रहांचा उजवा हात अभय मुद्रा व डावा हात माडीवर असे वर्णन आढळते. अग्निपुराण, पद्म पुराण, अभिलाषितार्थ चिंतामणी, रूपमण्डणम, ब्रह्म पुराण, मत्स्य पुराण, पूर्वकारणम, बृहत्संहिता (फक्त सूर्य वर्णन), मत्स्य पुराण, रुपावतार, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अपराजितापुत्रा, आदित्य पुराण या सांगण्या ग्रंथात नवग्रहांच्या स्वरूप, वेप, रंग, वाहन, आयुध, गण याविषयी विविधता आढळते. ई. पू. काळापासून सूर्याच्या प्रतिमांची निर्मिती पूजनासाठी झाली आहे. परंतु नवग्रह म्हणून सूर्य व इतर आठ ग्रह शिलाखड तसेच नवग्रह पट्टे स्वरूपात कोरण्याची पद्धत सुरू झाली. ई. स. च्या सहाव्या, सातव्या शतकापासून मदिरेांच्या प्रवेशद्वारा वर नवग्रह अकन आढळते. ई. स. सातव्या ते ई. स. बाराव्या, तेराव्या शतका पर्यंत भारतात ठिकठिकाणी मदिरे व जैन स्थळांच्या प्रवेशद्वारावर नवग्रहांच्या प्रतिमा सर्रास कोरलेल्या आढळतात. या नवग्रह मूर्ती दक्खिण आहेत. दक्षिण भारतातील मदिरेमध्ये शक्यतो प्रत्येक ग्रहाची स्वतंत्र मूर्ती आहे. प्राचीन शाखानुसार सूर्य मदिरेवर नवग्रह प्रतिमांची निर्मिती करणे आवश्यक आहे. ही सर्व ग्रह मुकुट व रत्नजडीत कुडल घातलेले आहेत. या नवग्रहांच्या मूर्ती विकासा मध्ये प्रमुख देवतांचे जे या ग्रहाचे आदिदेवतसुद्धा आहे त्या देवतांच्या स्वरूपात कल्पना केलेली असते. सूर्या मध्ये वैष्णवी, चंद्र मध्ये वरुण, मंगळ मध्ये कार्तिकेय, बुध मध्ये विष्णु, बृहस्पति, गुरु मध्ये ब्रह्मा, शुक्र मध्ये शुक्र, शनि मध्ये यम, राहु मध्ये सर्प, केतू मध्ये मंगळ यांच्या स्वरूपात कल्पना केलेली दिसते. या ग्रहांच्या हातातील आयुध प्रतीकात्मक दाखविली. असावीत उदा, विध्वंस, वैराग्य, वैदिक धर्मात खाली दिलेल्या तक्ता क्र. 1. प्रमाणे प्रतिमा लक्षण मागितले आहेत.⁹ जैन परंपरेतील नवग्रह प्रतिमा लक्षणे खालील तक्ता क्र. 2 दर्शविल्याप्रमाणे आहे.¹⁰

तक्ता क्र. 1

संख्या	नवग्रह	वर्ण	हस्त	वस्त्र	वाहन	शासन-वाहन
१	सूर्य	शुभ्र	१२	१२	सत्कारव रथ	
२	सोम	"	कुंडर	कुंडर	दशरथ-रथ	
३	मौम	रक्त	दशर	शंभुदंतु	द्वार वाहन	
४	बुध	रीत	चातुद्रा	मे	वर्षासन	
५	गुरु	"	ब्रह्ममाला	ब्रह्मदंतु	हंथावाहन	
६	शुक्र	शुभ्र	"	"	मखरु-वाहन	
७	शनि	इभ्य	६२४	"	—	
८	राहु	धुव	—	—	कुण्ड-वनाप रणु	श शपथु कर्षार
९	केतु	"	शंभुति मुद्रा	मे		

तक्ता क्र. 2

नवग्रह

१. सूर्य—रक्तवस्त्र, कमलदस्त, मरुताश्वरथवाहन ।
२. चन्द्र—श्वेत वस्त्र, श्वेतदशबाजिवाहन, सुधाकुम्भदस्त ।
३. मंगळ—विद्रुमवर्ण, रक्ताश्वर, भूमिस्थित, कुदालदस्त ।
४. बुध—हरितवस्त्र, कलहंसवाहन, पुस्तकदस्त ।
५. बृहस्पति—काश्मिरीवर्ण, पीताश्वर, पुस्तकदस्त, हंथावाहन ।
६. शुक्र—स्फटिकीलकवला, श्वेताश्वर, कुम्भदस्त, तुंगवाहन ।
७. शनैश्चर—नीलदैद, नीलाश्वर, परशुदस्त, कमठवाहन ।
८. राहु—कृष्णलश्मामल, श्यामवस्त्र, परशुदस्त, मिहवाहन ।
९. केतु—श्यामाङ्ग, श्यामवस्त्र, पद्मवाहन, पद्मवाहन ।

जैन धर्मा मध्ये मनुष्याच्या नवग्रहांच्या ग्रहदशेमुळे येणाऱ्या दुखाचे निवारण करण्यासाठी महान जैनाचार्य वेगवेगळ्या तीर्थंकराचे पूजन करण्याचा सल्ला देतात त्यामुळे पाप नष्ट होऊन पुण्य वाढते व वाईट काळ निघून जातो अशी श्रद्धा आहे या जैनाचार्यांनी नवग्रह संबंधित तीर्थंकरांच्या नवग्रह जिनालय चा उल्लेख केला आहे या मध्ये या तीर्थंकराचे वेगवेगळे स्वतंत्र चैत्यालय निर्माण करावे किंवा सोबत एकत्र बनवावे असा उपदेश केला आहे. एवढेच नव्हे तर सूर्य मंदिर मध्ये प्रत्येक ग्रह कोणत्या दिशेस असावा याचे मार्गदर्शन सुद्धा केले आहे " नवग्रहा मध्ये कोणत्या ग्रहासाठी कोणत्या तीर्थंकराची पूजा करावी व प्रत्येक ग्रह कोणत्या दिशेस असावा हे खालील प्रतिमेत दाखवले आहे

नवग्रहांची शांति के लिये पूज्य तीर्थंकरों की नामावली		सूर्य मन्दिर में नवग्रहों का स्थान #	
ग्रह का नाम	तीर्थंकर का नाम	मध्य में	- सूर्य
सूर्य	पद्मनाभ	आग्नेय में	- मंगल
चन्द्र	चन्द्रमन	दक्षिण में	- गुरु
मंगल	वासुदेव	नैऋत्य में	- राहु
बुध	विमलनाथ अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ	पश्चिम में	- शुक्र
गुरु	वृन्धनाथ, अरुन्धनाथ, नगिननाथ, वर्धमान	वायव्य में	- केतु
शुक्र	अचभनाथ, अजितनाथ, संपवनाथ	उत्तर में	- बुध
शनि	अभिनन्दनाथ, सुप्रतिनाथ, सुप्रार्थनाथ	ईशान में	- शनि
राहु	शौचलनाथ शैवालनाथ	पूर्व में	- चन्द्रमा
केतु	पुष्यदास		
	मुनिसुप्रतनाथ		
	नैमिनाथ		
	महिलनाथ, पार्वतीनाथ		

भारतीय धर्मशास्त्रामध्ये अनेक झाडे, वेलीमध्ये देव-देवता याचे अस्तित्व मानले गेले आहे तसेच नवग्रह शांती करताना कोणत्या ग्रहामाठी कोणत्या वृक्षाच्या समिधा अर्पण कराव्यात याचा उल्लेख मिळतो ¹² त्याचे वर्णन करणारा तत्का खाली आपणास पहावयास मिळतो (सूर्य-रई चंद्र-पळस, मंगळ-खैर, बुध-अघाडा, गुरु-पिपळ, शुक्र-उवर, शनि-शमी, राहु-दूर्वा, केतू-शमी,दूर्वा)

रवि	—	नमिषा—मदार
सोम	—	समिषा—पताश
मंगल	—	समिषा—धादिर
बुध	—	समिषा—कपानाग
वृहस्पति	—	समिषा—संदल
शुक्र	—	समिषा—गुनर, उदुवर
शनि	—	समिषा—गनी
राहु	—	समिषा—दूर्वा
केतु	—	समिषा—गनी वा दूर्वा

आर्यभट्टने पाचव्या शतकात ग्रहाची मन्दिरे व्याख्या केली आहे ¹¹ तसेच अपगजित पृच्छा, रूप मडन, देवतामूर्ती प्रकरण मध्ये समस्त ग्रहाना सामान्यतः किरीट मुकुट, माला, रत्न कुडल, केयूर, हार या मह विभूषित असावेत असे म्हटले आहे ¹⁴

सूर्य:-

सूर्यमालेतील केंद्रबिंदू/जनक तागा म्हणजे ज्याच्याभोवती सूर्यमालेतील सर्व ग्रह - उपग्रह फिरतात तो सूर्य हेला, तपन, दिनकृत, भानु, पूषा, अरुण, अर्क, गवी आदित्य, दिनकर, सूर्यनागयण, भास्कर या नावाने सूर्यास ओळखले जाते सूर्याचा अधिकार स्वर्ग व भूलोक यावर चालतो चंद्र व नक्षत्र हे सूर्याच्या आधारावरच अस्तित्वात आहे ¹⁵ ऋग्वेद मध्ये सूर्यावर 7 कचा रचल्या आहेत ऋग्वेद मध्ये सूर्य मंडल असा शब्द आला असला तरी तो किरणासहित सजीव सृष्टीचा पोषक असा शक्तिशाली सूर्य या संदर्भात आला आहे ¹⁶ यजुर्वेदामध्ये प्रमुख वाग देवता पैकी एक असलेला सूर्य हा उत्पादन करणारा असून सर्वांना उत्पादनासाठी प्रेरित करणारा असतो ¹⁷

सूर्य सूर्यास रक्तवस्त्र, कमलहस्त व सम्राट्ठरथवाहन असे म्हटले आहे सूर्याचा वर्ण शुक्ल (गौर) आयुध पद्म (दक्षिण / उजव्या हातात), पद्म (वाम / डाव्या हातात) आसन / वाहन, सम्राट्ठ रथ असे वर्णन आढळते सूर्यास रक्तवस्त्र, कमलहस्त व सम्राट्ठरथवाहन असे म्हटले आहे सूर्याचा वर्ण शुक्ल (गौर), आयुध पद्म (दक्षिण / उजव्या हातात), पद्म (वाम / डाव्या हातात) आसन / वाहन, सम्राट्ठ रथ असे वर्णन आढळते ¹⁸ सूर्याचा कश्यप व आदिती याचा लहान मुलगा आहे ¹⁹ आदितीच्या गर्भवस्थेतील उपवास यामुळे कश्यप कपि रागाने आदितीस विचारतात मारितम अडम म्हणून तो मारतड या नावाने सुद्धा ओळखला गेला भविष्य पुराणामध्ये तो ब्रह्माच्या वशातील मरीची पुत्र आहे इद्रानेच सूर्य उत्पन्न केला ²⁰ त्वष्टा ची मुलगी सरण्य वगोबर विवस्वान सूर्याचा विवाह झाला ²¹

सूर्य हेच ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र (शिव) याच्या रूपाने पृथ्वीची निर्मिती, पोषण व विनाश करता आदिकाल मध्ये जन्म झाल्यान न्यास आदित्य म्हटले जाते तो निराकार अक्षर रूप असला तरी त्याची सगुण, साकार स्वरूपात सुद्धा पूजा केली जाते तो द्विभुज असून त्यामध्ये कमळ आणि मोत्याचा मुकुट वा रत्नाच्या माळा यानी तो मालकृत आहे कमळाच्या अंतर्भागाप्रमाणे सूर्याची शुभ्र काती असून तो सात पांडुच्याच्या ग्धामध्ये बसला आहे या ग्धामध्ये एक चक्र असून त्यास मवन्मर म्हटले जाते या चक्रास असलेल्या वाग आगे म्हणजे वाग महीने ²² चक्र शक्ति, पाश वा अक्रुश ही सूर्याची प्रमुख आयुध आहेत ²³ सूर्याच्या आगमनावगोबर रात्र व नक्षत्र चोरा प्रमाणे पळून जातात ²⁴ देवगण सुद्धा सूर्याचे अतिक्रमण गोवू शकत नाहीत ²⁵

दाखवावा असा उल्लेख आहे या शिवाय अष्टावीस नक्षत्रे स्त्री रूपांमध्ये दाखवावीत⁴⁵ मत्स्य पुराणा मध्ये चंद्र चतुर्भुज, श्वेत वस्त्रधारी दोन चक्रांच्या रथात आरूढ असे वर्णन आहे अग्नि पुराण मध्ये चंद्र जपमाला व कमंडलू घेतलेला म्हटले आहे⁴⁶

मंगळ:- सूर्यापासून चौथा ग्रह म्हणजे मंगळ हा ग्रह मेष / बकन्या सह दिसून येतो हा ग्रह लाल रंग, लाल वस्त्रे परिधान केलेला दाखविताना चार हातात भाला, शूल, गदा, अक्षमाला, दंड, कमंडलू, शक्ती, खटवाग, वरद वगैरे आयुधे/प्रतीके दिसून येतात प्राथिक मतभेदाप्रमाणे यात बदल होतात मंगळास आठ घोड्यांचा किंवा मेषांचा रथ सांगितला आहे मंगळ या ग्रहास आठ घोड्यांचा सुवर्ण रथामध्ये निर्माण केला पाहिजे⁴⁷ मंगळ हा ग्रह लाल रंगाचा आहे शिल्परत्न मध्ये तो चतुर्भुज असून उजव्या हातामधील एका हातात शक्ति व एका हात वरद मुद्रेत असून डाव्या बाजूच्या एका हातात गदा व शूल आहे त्याचे वाहन मेष आहे असे वर्णन आहे⁴⁸ अपराजित पृच्छा मध्ये मुद्धा मंगळ या ग्रहाचे वाहन मेष हेच सांगितले आहे हा ग्रह भूमि पामून उत्पन्न झालेला म्हणून भौम म्हणतात मत्स्य पुराण मध्ये यास लाल माला, भाला, शूल, गदा धारण करणारा म्हटले आहे तो चतुर्भुज असून लाल रंगाच्या आठ घोड्यांच्या स्वर्ण रथात आरूढ आहे मंगळ ग्रहाच्या रथावर अग्नि सागळा लालबुद ध्वज असतो विष्णु पुराण मध्ये मंगळ ग्रहाच्या सोन्याच्या रथाचे आठ घोडे अग्नि पासून उत्पन्न झालेल्या पद्मगण मण्याप्रमाणे अरुण रंगाचे (लालसर) आहेत अग्नि पुराण मध्ये मंगळभाला व अक्षमाला घेतलेला असे वर्णन आहे⁴⁹ दक्षिण भारतीय परंपरेत मंगळ हा चतुर्भुज दाखवत असून त्याचा एक हात अभय किंवा वरद मुद्रे मध्ये, दुसऱ्या हातात शक्ति व डाव्या हातात गदा व शूल असतो अपराजित पृच्छा (214,15) मध्ये दंड व कमंडलू असल्याचे वर्णन आहे

बुध : सूर्यमालेतील बुध हा सूर्या नंतरचा पहिला ग्रह हा ग्रह ग्रहपति आहे हा ग्रह पिवळ्या रंगाचा, पिवळी वस्त्र घातलेला असून त्यास चार भुजा व आयुधे म्हणून तलवार, ढाल, गदा, धनुष्य, अक्षमाला आदी आहेत सिंह किंवा सिंहाचा रथ देखील सांगितला आहे रूपमंडन मध्ये मर्प आणि योगमुद्रेतील बुध सांगितला आहे एक कथानकाप्रमाणे कृपी पत्नी तारा आणि चंद्र यांच्या मयोगातून बुध ग्रह निर्माण झाला असल्याचे दिसून येते

बुध चंद्र पुत्र आहे महाभारतात त्यास प्राण्याना सकटाची सूचना देणारा म्हटले आहे मत्स्य पुराण मध्ये बुध ने पिवळी माळा व पिवळे वस्त्र घातलेला, अत्यंत पिवळ्या रंगाचा असून सिंहावर बसलेला खड्ग, ढाल व गदा घेतलेला आहे शिल्परत्न मध्ये बुधस्य सिंहासनावर बसलेला पिवळ्या रंगाचा, पिवळे वस्त्र घातलेला गदा धारी असून सर्व प्रकारचे सोन्याचे अलंकार घातलेला म्हटले आहे⁵⁰ विष्णु पुराण मध्ये बुध हा चंद्र ग्रहाप्रमाणेच सुंदर असून त्याचा रथ वायु व अग्नीमय पदार्थांचा बनलेला आहे त्याच्या रथाम अतिशय वेगवान असे पिवळ्या रंगाचे आठ घोडे जोडले आहेत⁵¹ विष्णु धर्मोत्तर पुराण मध्ये बुध विष्णुप्रमाणे निर्माण करून त्याचा रथ मंगळ प्रमाणे तयार करावा सिंह किंवा चार घोडे हा रथाम जोडलेले असावेत⁵² चतुर्भुज बुधाचा एक हात वरद मुद्रेत व उर्वरित हातात ढाल (खेटक), तलवार (खड्ग) व गदा असते अपराजितपृच्छा मध्ये बुध या ग्रहाचे वाहन मर्प असून त्याचे दोन हात योगमन मुद्रेत सांगितले आहे⁵³

गुरू : सूर्यमालेतील पाचवा ग्रह गुरू, गुरू म्हणजे एक श्रेष्ठ स्थान नावाप्रमाणेच सर्व ग्रहांचा गुरू आहे कारण त्याचा आकारच त्याचे मोठे वैशिष्ट्य आहे हा सर्व ग्रहामध्ये सर्वात मोठा आहे गुरू हा देवांचा गुरू असून त्यास बृहस्पति असे मुद्धा म्हटले जाते तो चतुर्भुज असून वरदमुद्रा, अक्षमाला, कमंडलू, सोटा / दंड, पुस्तक ही आयुधे आहेत त्याने पिवळे वस्त्र व माळ परिधान केल्याचे सांगितले आहेत गुरू / बृहस्पति या ग्रहाम तम सोन्याच्या रंगाप्रमाणे पिवळ्याजर्द दाखवून सालकृत पिवळ्या वस्त्रात व दक्षिण चतुर्भुज दाखवावा तो आठ घोड्यांच्या सुवर्ण रथात निर्माण करावा त्याच्या दोन्ही हाता मध्ये प्रत्येकी पुस्तक व अक्षमाला दाखवावी⁵⁴ रूपमंडन व अपराजितपृच्छाप्रमाणे या ग्रहाचे वाहन हंस आहे शिल्परत्न मध्ये तो चतुर्भुज सांगितला असून मत्स्य पुराण मध्ये चतुर्भुज गुरूच्या हातात दंड / सोटा, कमंडलू व अक्षमाला धरण करणारा असे वर्णन आहे विष्णु पुराण मध्ये गुरू या ग्रहाचा रथ सोन्याचा आहे पिवळ्या रंगाचे आठ घोडे या रथाम जोडले आहेत⁵⁵

शुक्र : सूर्यमालेतील शुक्र हा बुधग्रहानंतरचा दुसरा ग्रह ह्याचा आकार जवळपास आपल्या पृथ्वी एवढा आहे शुक्र / शुक्राचार्य हा देव्यांचा गुरू देव्याचार्य आहे चतुर्भुज असून वर, अक्षमाला, कमंडलू, सोटा, विष्णु धर्मोत्तर पुराण नुसार त्याचे वाहन घोड्यांचा रथ, दोन हात व त्यामध्ये निधी व पुस्तक हे आयुध असे शुक्राचे वर्णन येते शुक्र हा गौर वर्ण पाद्वर वस्त्रधारी दहा घोड्यांच्या चादीच्या रथात बसलेला निर्माण करावा⁵⁶ शुक्र हा कामवासनेशी संबंधित आहे शिल्परत्न व मत्स्य पुराण मध्ये शुक्र चतुर्भुज असून अक्षमाला, दंड व कमंडलू घेतलेला आहे मत्स्य पुराण मध्ये त्याचा रथ चादीचा असून त्यास पाद्वर घोडे जुपले आहेत अपराजितपृच्छा प्रमाणे या ग्रहाचे वाहन वेडूक आहे⁵⁷

शनी : सूर्यमालेतील सहावा ग्रह व गुरू नंतरचा सर्वात मोठा ग्रह म्हणजे शनी ह्याचा आकार देखील प्रचंड आहे या ग्रहाचे गिधाड हे वाहन, चार हात वरद, बाण, धनुष्य आणि शूल ही आयुधे असतात काही ग्रंथांनुसार वरद व सोटा आयुध आणि पदमपीठावर उभा असतो बाण, तलवार, धनुष्य, अभय किंवा वरद मुद्रा असेही आयुध सांगितली आहेत कृष्णवर्णीय, काळे वस्त्र परिधान केलेल्या शूल व अक्षमाला युक्त द्विभुज व लोखंडी आठ सर्प युक्त रथामध्ये शनि दाखवावा त्याचे शरीर नसानी झकलेले दाखवावे⁵⁸ इतर ठिकाणी शनिचे वस्त्राचा रंग काळा सांगितला असला तरी आगम मध्ये शनि पाद्वर वस्त्र परिधान करत असल्याचे म्हटले आहे तो द्विभुज वरद मुद्रा हात व गदाधारी किंवा कमंडलू धरण केलेला आहे मत्स्य पुराण मध्ये शनि चा रथ लोखंडाचा असल्याचे वर्णन आहे विष्णु पुराण मध्ये शनि पद गतीचा असून आपल्या रथातून तो हळू हळू मार्गक्रमण करतो त्याच्या रथाम आकाशापासून उत्पन्न विचित्र रंगाचे घोडे जुपले आहेत अश्रूमद्धेदागम मध्ये त्यास पदपीठवर तर अपराजितपृच्छा मध्ये महिषारूढ म्हटले आहे⁵⁹

राहू : राहू हा भयंकर दिसणारा, उभे केस व बटवटीत डोळ्यांचा विस्फारीत नजरोचा आहे अभिलाषितार्थ चिंतामणी नुसार सिंहासनावर बसलेला वर, तलवार, ढाल, शूल आयुध असलेला अर्धचंद्रधारी असे अग्निपुराणात वर्णन आहे उजवा हात रिकामा व डाव्या हातात घोमडी व पुस्तक असे वर्णन विष्णु धर्मोत्तर मध्ये आहे निळा सिंह जोडलेला रथ असेही वर्णन राहूचे येते आठ घोड्यांनी युक्त चादीच्या रथात राहू निर्माण केला पाहिजे त्याचे एक हात (डावा) व केवळ डोक असलेलीच राहूची मूर्ती दाखवावी राहूचा उजवा हात शून्य असल्याचे वर्णन आहे⁶⁰ शिल्परत्न मध्ये राहू सिंहासनावर बसलेला व हातात ढाल व तलवार असून भयंकर चेहरा असलेला असे वर्णन आहे मत्स्य पुराणमध्ये मुद्धा कुरूप व भयंकर चेहऱ्याचा दक्षिण व निळ्या सिंहासनावर बसलेला आहे विष्णु पुराण मध्ये मातकट रंगाच्या रथात राहू असतो त्यास भुक्कट रंगाचे आठ घोडे जोडलेले असतात हे घोडे

रथास जुपल्यावर सतत चालत राहतात हे या घोड्याचे वैशिष्ट्य सांगितले आहे. राहूचे केस उभे असून त्याचा उपडा जबडा हातास जोडलेला आहे.⁶¹ अपराजितपुच्छा व रूपमंडनमध्ये राहूचे अर्धशरीर हवनकुडाच्या मध्ये दर्शवावे असे वर्णन आढळते.⁶²

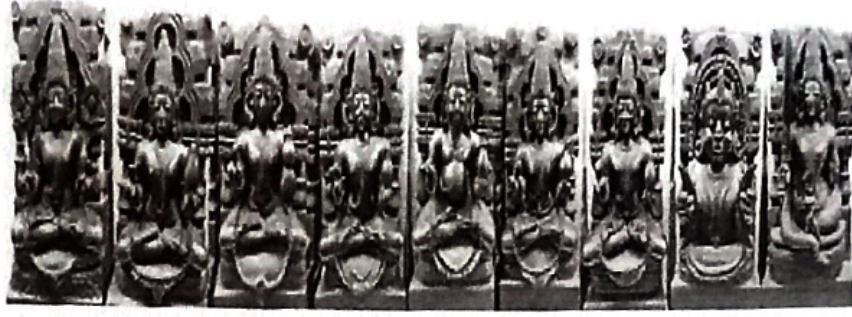
केतू : प्राचीन ग्रंथांमध्ये केतू या ग्रहाचे वरचे शरीर मानव व शरीराचा खालचा भाग सर्पकृती असल्याचे म्हटले आहे. शिल्परत्न मध्ये केतू या ग्रहाचे वाहन गिधाड असून तो दक्षिण अक्षरे त्यामध्ये गदा आणि वरद मुद्रा हात आहे. अग्नीपुराणानुसार हानात तलवार आणि दिवा, रूपमंडन नुसार सर्प प्रमाणे पुच्छ असलेला पाखा पक्षी वाहन असलेला अमेही वर्णन येते. केतूला ग्रह चित्र विचित्र ग्याच्या माळा घातलेला, वैदूर्यग्याचे अलंकार घातलेला व डोक्यावर मुकुट असलेला आहे.⁶³ केतू हा ग्रह भौम म्हणजेच मंगळ ग्रहाप्रमाणे दाखवावा. केतूला ग्रहाच्या रथाम फक्त दहा घोडे दाखवावेत एवढेच मंगळ ग्रहापेक्षा केतू बावत विष्णु धर्मोत्तर पुराण मध्ये सांगितले आहे.⁶⁴ केतू हा ग्रह लाल कर्ण कुंडल, केयूर व हात घातलेला आहे. मत्स्य पुराण मध्ये केतूचे वाहन गिधाड आहे. विष्णु पुराण मध्ये केतूचे वाहन रथ असून त्यास आठ तेजस्वी घोडे लाखेसाख्या लाल ग्याचे असतात. ते वायुवेगाने दौडतात. दहा घोड्यांच्या रथात स्वार विकृत चेहऱ्याचा केतूच्या हातात गदा असते. अपराजितपुच्छा व रूपमंडनमध्ये अर्धमर्पपुच्छकृत व धूम्र वर्ण धुकट केतूचे दोन्ही हात अजली मुद्रेत जोडलेले आहेत असे वर्णन आढळते.⁶⁵ केतू च्या मूर्तीच्या डोक्यावर छत्र म्हणून मर्पाचा फणा दिमतो. शिल्पातील राहू केवळ मुख असलेला दाखविताना कारण विष्णूने सुदर्शन चक्राच्या साहाय्याने बोरून अमृत पिणाऱ्या राक्षसाचा शिरच्छेद केला पण अमृत पिल्यामुळे त्याचे शीर राहू झाले तर उर्वरित शरीर केतू झाले.⁶⁶

सूर्य मंदिरामध्ये पूर्वस मोम दक भौम आग्नेयस मंगळ चंद्र षिण दिशेस गुरु वायव्य पश्चिम दिशेस शुक्र नैऋत्य दिशेस राहु बृहस्पति इशान्य दिशेस शनि अशा प्रकारे ग्रह स्थापन करावेत, तर दिशेस बुधउ, दिशेस केतूसूर्य मूर्तीच्या प्रभावळी मध्येशुक्रराहु व केतू कोरलेला शनि ही मूर्ती जुनगढ येथील वस्तुसंग्रहा आहे. लय मध्ये आहेया मूर्ती इंडियन आहेत राहु या चार ग्रहाच्या मूर्ती शनि शुक्र गुरु सागनाथ येथे बृहस्पति खजुराहो येथे संग्रहालयात सुद्धा नवग्रह प्रतिमा शुक्र व शनि या ग्रहाच्या मूर्तीच्या मागे प्रभामंडळ दाखविले आहे. बृहस्पति वस्तुसंग्रहालयामध्ये आहे. आह सर्व प्रतिमांच्या डोक्यावर मुकुट ली आहेयामध्ये आठ मूर्ती एका ओळीत उभ्या असून एक मूर्ती डाव्या कोपऱ्यात पुढच्या बाजूस वसले. कलकत्ता विद्यापीठाच्या आशुतोष हळू हळू नवग्रहाच्या मूर्तीच्या स्वरूपात बदल होत गेला असून त्याचा उजवा हात वरद मुद्रेत आहे. संग्रहालयामध्ये नवग्रहाच्या शिल्पपट्टा मध्ये सुरवातीस गणेश मूर्ती आहे.⁶⁷ व वसलेल्या सुदर् ग्रह मूर्ती आहेतत्या नंतर पदमरीटाव विष्णु धर्मोत्तर मध्ये सूर्य व चंद्रास अनुक्रमे अग्नि व वरुण याचे दुसरे रूप मानले आहे.⁶⁸

श्रीहाडगा या सी आर काणे व श्री व्ही पी च्या मते आत्ता अस्तित्वात असलेली पुराणे त्याच्या मूळ स्वरूपात अस्तित्वात नाहीत. महाव्या शतकानंतर सुरू झालेल्या सकलनाच्या दुसऱ्या टप्प्यात सकलनकर्त्यांचे लक्ष स्मृतिग्रंथा मधील स ई त्याचे सकलन अनेक टप्प्यात झाले. पूजा याकडे केंद्रित झाले. इतिहासलेहजार पर्यंत स ई ही प्रक्रिया तिसऱ्या ते चौथ्या शतकापासून पुराणांच्या सकलनाची सुरवात झाली. स ई स विष्णु धर्मोत्तर पुराण ई चाललीकाही पुराणे मूळच्या एका पुराणग्रंथातून वेगळी करून नवा पुराण ग्रंथ म्हणून मान्यता पावली. 1000 स ते ई 600 पर्यंत सकलित केले गेले. काही पुराणे न्त सकलित करण्यात आले. तेराशे पर्यंत स आठवे शतक ते ई/सातवे स उपपुराणांच्या सकलनाची सुरवात ई.⁶⁹ भविष्य पुराण साख्या ग्रंथाचा विस्तार ब्रिटिश काळा पर्यंत होत राहिला. अपराजित पुच्छा भूवनादेव यानी ई 12 स व्या शतकात केली आहे.⁷⁰ मानसोल्लासची रचना मोमेश्वर चालुक्य याने बाराव्या शतकात केली. शतक होता आर्यभट्टाचा काळ पाचवे निष्कर्ष :

- 1 सूर्य व चंद्र याचे उल्लेख आपल्याला ऋग्वेद काळापासून आढळत असले तरी त्यांना नवग्रहामध्ये स्थान साधारण पाचव्या शतकामध्ये मिळाले.
- 2 ई पाचव्या शतकापासून भारतीयांच्या धर्म तत्वज्ञानामध्ये नवग्रहाना स्थान मिळाले स.
- 3 मूळ पुराणामध्ये छेडछाड होऊन त्याचा विस्तार होत गेला. तसतसा नवग्रहाविषयी अनेक पौराणिक कथांचा उदय व विकास झाला व ग्रहाच्या अनिष्ट परिणामापासून वाचण्यासाठी नवग्रहाची मूर्ती स्थापन करून त्याचे पूजनसाधारण पाचव्या ते महाव्या शतकापासून उपामना सुरू झाली. पुढच्या काळात मंदिर स्थापन्यात नवग्रहाच्या स्वतंत्र मूर्ती किंवा नवग्रह पट्टे स्वरूपात स्थापन करून त्याचे पूजन सुरू झाले. अशा नवग्रह मूर्ती ही पद्धत म असणे सर्वसामान्य झाले. ध्ययुगाच्या पूर्वार्धा पर्यंत टिकून होती. हळू हळू मंदिर स्थापन्यातील नवग्रहाचे स्थान नष्ट होत गेले.
- 4 वैदिक धर्माच्या प्रभावाने जैन स्थापत्य व पूजनामध्ये वेगळ्या स्वरूपात नवग्रहाना स्थान मिळाले.
- 5 वेगवेगळ्या ग्रहाना वेगवेगळ्या वनस्पतीच्या समिधा सांगून वैदिक धर्मतत्वज्ञानातील पळसखेर या, रुई, दुर्वा, शमी, उवा, आघाडा, पिपळ च अधोरेखित करण्यात आले. वनस्पतीचे धार्मिक महत्व अधिक.





संदर्भसूची:

- 1 <https://www.avakashvedh.com>
- 2 <https://solarsystem.nasa.gov/planets/overview>
- 3 <https://www.marathijunction.in/planets-name>
- 4 तिवारी मारुतिनदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वागणसी, 1997 पृ 177
- 5 सपा प जोशी महादेवशास्त्री, भारतीय संस्कृतिकोश, खंड 4, भारतीय संस्कृतिकोश मंडल, पुणे, 2016, पृ 705
- 6 खरे ग ह, मूर्तिविज्ञान, भारत इतिहास संशोधन मंडळ, पुणे, 2012 पृ 146-147
- 7 कित्ता, पृ 140-143
- 8 तिवारी मारुतिनदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 177
- 9 शुक्ल द्विजेंद्र नाथ, भारतीय वास्तुशास्त्र, प्रतिमा विज्ञान, वास्तु-वाङ्मय-प्रकाशन-शाला, लखनऊ, 1956, पृ 285-286
- 10 कित्ता, पृ 318
- 11 सपा वडजान्या नरेद्र कुमार, देव शिल्प, मंदिर वास्तु एव शिल्प, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगंबर जैन संस्कृति न्यास, नागपूर, 2000 पृ 93 325
- 12 पुरी उषा, भारतीय मिथक कोश, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, नवी दिल्ली 1986, पृ 64
- 13 कित्ता, पृ 74
- 14 अपराजित पृच्छा 214, 19, रूप मंडन 2, 24, देवतामूर्ती प्रकरण 4, 58
- 15 शर्मा गंगा सहाय, ऋग्वेद, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2016, ऋग्वेद 1 35 2
- 16 कित्ता, 1 164 1-15, 5 62 1-4
- 17 पुरी उषा, भारतीय मिथक कोश, पृ 39
- 18 शुक्ल द्विजेंद्रनाथ, भारतीय वास्तुशास्त्र-ग्रंथ चतुर्थ, प्रतिमा विज्ञान, पृ 285
- 19 वा वृदावनदास, (वेद-व्यास प्रणीत) श्रीमार्कंडेय पुराण, लाला श्यामलाल हिरालालप्रकाशक, मथुरा, 1941, अध्याय 101, पृष्ठ 341
- 20 शर्मा गंगा सहाय, ऋग्वेद, 2 19 3
- 21 कित्ता, 1/164, अपराजित पृच्छा 214, 17, रूप मंडन 2, 22
- 22 कित्ता, 1 164 11
- 23 नवग्रह सहिता मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2011, पृष्ठ 8
- 24 शर्मा गंगा सहाय, ऋग्वेद, उपरोक्त, 1 50 2
- 25 कित्ता, 1 105 16
- 26 कित्ता, 1 175 4
- 27 कित्ता, 1 50 7
- 28 कित्ता, 1 191 8
- 29 खरे ग ह, मूर्तिविज्ञान, 138
- 30 सपा महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री, गवर्नमेंट ऑफ महाराजा ऑफ त्रावणकोर, श्री कुमार प्रणित शिल्परत्न, पार्ट 1, 1922 उतरभाग, 25/153 पृ 173
- 31 नवग्रह सहिता पृ 8
- 32 मन्व्य पुराण (261.5) मिश्र इंदुमती प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, चतुर्थ आवृत्ती 2009, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भापाळ, पृ 287
- 33 तिवारी मारुतिनदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 177
- 34 खरे ग ह, मूर्तिविज्ञान, 138

- 35 विनोदचंद्र श्रीवास्तव, अनुवादित, सांब-पुराण, इंडोलोजिकल पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 1975, अध्याय 26 श्लोक 7-8, पृष्ठ 94.
- 36 Nath Vijay, Puranas and Acculturation-A Historico-Anthropological Perspective, MunshuRamManoharlal publishers, New Delhi, 2010, p 9
- 37 Banerjee Jitendra Nath, The Development Of Hindu Iconography, Second Edition, University Of Calcutta, 1956, P. 137-138
- 38 Banerjee, Op cit 139, 433
- 39 खरे ग ह, मूर्तिविज्ञान, पृ 144.
- 40 Banerjee, Op cit, 435
- 41 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, इंडियन प्रेम, प्राइवेट लिमिटेड, प्रयाग, 1960, अ 21, पृ 39
- 42 अपराजित पृच्छा 214, 17, मिश्र इदुमति, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, पृ 288-289
- 43 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 177
- 44 पुरी उषा, भारतीय मिथक कोश पृ 39
- 45 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 22, पृ 41-42
- 46 शर्मा (आचार्य) श्रीराम, मत्स्य पुराण, भाग 2, संस्कृति संस्थान, बरेली, 1970(125 / 6,7,8,) पृ 470, अपराजित पृच्छा 214, 17
- 47 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 43
- 48 सपा महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री, शिल्प रत्न, अ 25
- 49 सपा पोद्दार हनुमतप्रसाद, गोस्वामी चिमणलाल, शास्त्री एम ए., अग्निपुराण, मोतीलाल जालान, गोरखपुर, 51/1, पृ 90
- 50 शर्मा (आचार्य) श्रीराम, मत्स्य पुराण, भाग 2, मत्स्य पुराण, 93/4 पृ 247
- 51 शर्मा (आचार्य) श्रीराम, विष्णु पुराण, भाग 1, संस्कृति संस्थान, बरेली, 1967, 2 /12/19, पृ 323
- 52 अपराजित पृच्छा 214, 17, मिश्र इदुमति, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, पृ 288-289
- 53 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 179
- 54 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 43
- 55 शर्मा (आचार्य) श्रीराम, विष्णु पुराण, भाग 1, 2/12/19, पृ 326
- 56 अपराजित पृच्छा 214, 18, मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 43
- 57 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 179
- 58 अपराजित पृच्छा 214, 18, मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 43
- 59 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 179 60 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 4
- 60 मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 4
- 61 अपराजित पृच्छा 214, 18, रूप मंडन 2, 20-21, 2, 23, शर्मा (आचार्य) श्रीराम, विष्णु पुराण, भाग 1, 2/12/21, पृ 326
- 62 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 179
- 63 खरे ग ह, मूर्तिविज्ञान, पृ 143
- 64 अपराजित पृच्छा 214, 19, रूप मंडन 2, 20-21, 2, 24, मालविय बद्रीनाथ, श्रीविष्णु धर्मोत्तर मे मूर्तिकला, उत्तरभाग अ 23, पृ 43
- 65 तिवारी मारुतिनंदन, गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण, 180
- 66 <http://vishwakosh.marathi.gov.in>
- 67 मिश्र इदुमती, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, 294
- 68 Banerjee, Op cit, 444-445
- 69 मिश्र इदुमति, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, पृ 290
- 70 Nath Vijay, Puranas and Acculturations, Munshiram Manohar Lal Publishers, 2010, P. 5-10
- 71 wisdomlib.org/definition/aparajitapriccha
(विशेष सहकार्य – श्री आदित्य फडके, श्री उमाकांत रानिंगा, श्री लक्ष्मीकांत सोनवटकर)